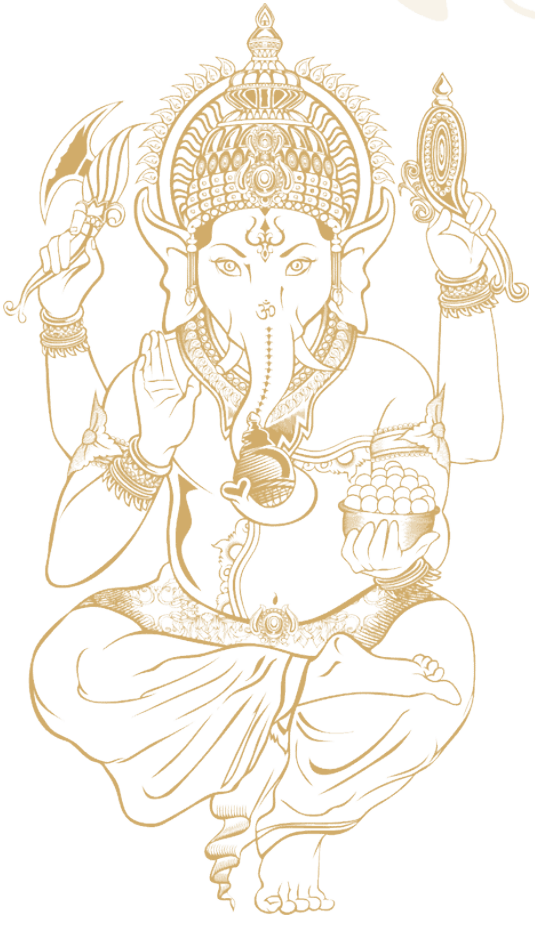

km.khushi

23 Sep 2007

06:05 AM

Sikar

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121955201**

तिथि 23/09/2007 **समय** 06:05:00 **वार** रविवार **स्थान** Sikar **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:58:01
अक्षांश 27:51:00 उत्तर **रेखांश** 75:14:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:29:04 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	05:41:53 घं
वेलान्तर	00:07:25 घं
सूर्योदय	06:17:17 घं
सूर्यास्त	18:26:11 घं
चैत्रादि संवत	2064
शक संवत	1929
मास	भाद्रपद
पक्ष	शुक्ल
तिथि	11
नक्षत्र	श्रवण
योग	सुकर्मा
करण	विष्टि

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	वानर
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	खू-खुशी
पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
होरा	बुध
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

चन्द्र 6वर्ष 2मा 6दि

राहु

28/11/2020
28/11/2038

राहु	11/08/2023
गुरु	04/01/2026
शनि	10/11/2028
बुध	30/05/2031
केतु	17/06/2032
शुक्र	17/06/2035
सूर्य	11/05/2036
चन्द्र	10/11/2037
मंगल	28/11/2038

योगिनी

मंगला 0वर्ष 7मा 12दि

उल्का

06/05/2022
06/05/2028

उल्का	06/05/2023
सिद्धा	05/07/2024
संकटा	04/11/2025
मंगला	04/01/2026
पिंगला	06/05/2026
धान्या	05/11/2026
भ्रामरी	06/07/2027
भद्रिका	06/05/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			02:01:11	कन्या	उ०फाल्गुनी	2	सूर्य	गुरु	---	0:00			
सूर्य			05:39:19	कन्या	उ०फाल्गुनी	3	सूर्य	बुध	सम राशि	1.33	पुत्र	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			15:05:20	मक	श्रवण	2	चंद्र	गुरु	सम राशि	1.17	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			03:12:20	मिथु	मृगशिरा	3	मंगल	शुक्र	शत्रु राशि	1.86	ज्ञाति	भ्रातृ	सम्पत
बुध			00:42:53	तुला	चित्रा	3	मंगल	बुध	मित्र राशि	1.20	कलत्र	ज्ञाति	सम्पत
गुरु			19:09:46	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	केतु	मित्र राशि	1.01	अमात्य	धन	साधक
शुक्र			26:14:39	कर्क	आश्लेषा	3	बुध	गुरु	शत्रु राशि	1.26	आत्मा	कलत्र	साधक
शनि			08:32:36	सिंह	मघा	3	केतु	गुरु	शत्रु राशि	1.29	मातृ	आयु	वध
राहु			12:59:08	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु			12:59:08	सिंह	मघा	4	केतु	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

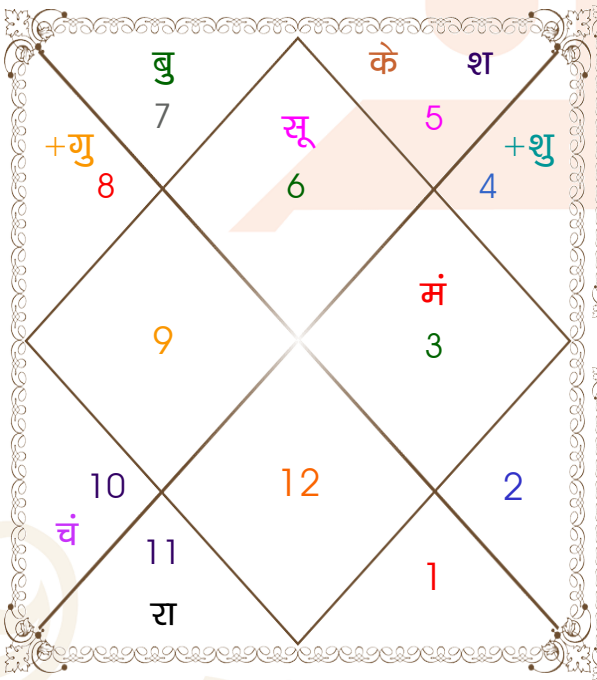

चन्द्र कुंडली

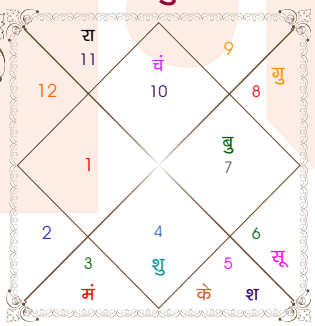

नवमांश कुंडली

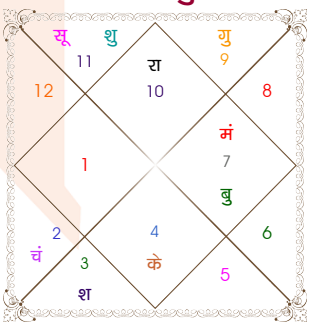

सर्वाष्टकवर्ग

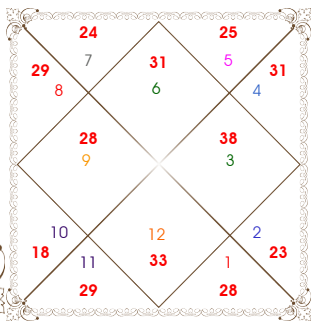

दशमांश कुंडली

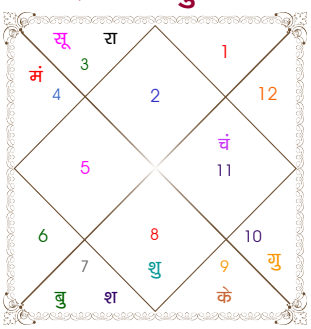

नक्षत्रफल

आप श्रवण नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी अन्त्य, गण देव, वर्ग मार्जार, वर्ण वैश्य तथा योनि वानर होगी। नक्षत्र के द्वितीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "खु" या "खू" अक्षर से होगा।

आपको शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त करने की तीव्र रूचि रहेगी तथा परिश्रमपूर्वक आप हमेशा ज्ञानार्जन करेंगी। आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा सभी मित्रों से आप सहयोग एवं सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगी। साथ ही कन्यासंतति की अपेक्षा आपकी पुत्र संतति की संख्या अधिक रहेगी एवं इनके सुख को आप आजीवन प्राप्त करेंगी। सज्जन लोगों एवं विद्वानों के प्रति आपके मन में नित्य आदर तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं आप नित्य उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में आप प्रायः सफल रहेंगी एवं आपके शत्रु आपसे सर्वदा भयभीत ही रहेगे। इसके अतिरिक्त आप धार्मिक ग्रंथों का श्रवण करने के लिए तथा यत्न पूर्वक सर्वदा तत्पर रहेंगी।

शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्ति विजितारिपक्षः।
प्राणी पुराणश्रवण प्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक शास्त्रों में सलंग्न, अधिक पुत्र और मित्रों वाला, सत्पात्रों का भक्त, शत्रुनाश करने वाला एवं पुराण श्रवण करने में तेज होता है।

देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा एवं पूजा का भाव विद्यमान रहेगा अतः आप हमेशा इनकी सेवा एवं पूजा कार्य में तत्पर रहेंगी। आप एक धनाढ्य महिला होंगी तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। इसके साथ ही अपनी योग्यता एवं बुद्धि के बल पर आप किसी उच्चाधिकार प्राप्त प्रतिष्ठित पद को भी प्राप्त करने में सफल रहेंगी। धर्म के प्रति आपके मन में गहन निष्ठा का भाव रहेगा तथा धार्मिक कृत्यों को भी आप समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी।

श्रावणायां द्विजदेवभक्तिनिरतो राजा धनी धर्मवान।
जातक परिजातः

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता तथा ब्राह्मणों की भक्ति में तत्पर रहने वाला, राजा, धनी तथा धर्मनिष्ठ होता है।

समाज में आप एक सम्माननीय महिला होंगी तथा सभी सामाजिक जन आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे। शास्त्रों के विस्तृत ज्ञान होने के कारण आप एक विदुषी के रूप में ख्याति अर्जित करेंगी एवं दूर दूर तक लोग आपके विषय में जानेंगे। आपके मन में उदारता की भावना भी रहेगी अतः समाज में दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द लोगों को

आप यथा शक्ति तन मन धन से अपना हादिक सहयोग प्रदान करेंगी तथा इनकी सहायता भी करती रहेंगी। आपके पति एक धनाढ्य गुणवान एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे। अतः आपका परिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नता के साथ व्यतीत होगा।

श्रीमाञ्छ्रवणे श्रुतवानुदारदारो धनान्वितः ख्यातः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक लक्ष्मीवान, पंडित, सौन्दर्ययुक्त, गुणीभार्या का पति, धनी तथा विख्यात होता है।

आप कृतज्ञता के गुण से भी सुशोभित रहेंगी तथा अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर उनका उपकार स्वीकार करेंगी तथा हादिक आभार भी प्रकट करेंगी। इससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आपका शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। साथ ही आपकी सन्ततियां अधिक संख्या में उत्पन्न होगी तथा जीवन में आप सर्व गुणों से सम्पन्न रहकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी।

कृतज्ञः सुभगोदाता गुणैः सर्वैश्च संयुक्तः।
श्रीमान सन्तानबहुलः श्रवणे जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में जातक कृतज्ञ, सुन्दर, दानी, सर्वगुणसम्पन्न एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

रजत पाद में जन्म होने के कारण आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय रहेगी तथा इसमें पूर्ण कोमलता तथा कान्ति भी विराजमान रहेगी। आपकी मुखाकृति अत्यन्त ही सुन्दर एवं आकर्षक रहेगी। आपका इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा अनावश्यक इच्छाओं का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक इसका पालन करती रहेंगी आपकी गति मधुर एवं आकर्षक रहेगी। जीवन में धन सम्पति तथा पुत्र से आप सुसम्पन्न तथा प्रसन्न रहेंगी। आपके पति पूर्ण रूप से आपका सम्मान करेंगे एवं अधिकांशतया मुख्य कार्यों को आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सुशील एवं विव्रम स्वभाव की महिला होंगी तथा धन संचय के प्रति भी आप पूर्ण रूप से यत्नशील रहेंगी। जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य से भी आप सम्पन्न रहेंगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा अधिकांश सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी।

मकर राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी ऊंचाई अधिक होगी तथा मस्तक भी विस्तृत होगा। आपकी आखें देखने में अत्यन्त ही सुन्दर होंगी तथा शारीरिक सौन्दर्य भी आकर्षक रहेगा। संगीत के प्रति आपके मन में नैसर्गिक आकर्षण रहेगा तथा इसके विषय में आप विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगी। ठण्ड से आप व्याकुलता की अनुभूति करेंगी एवं इसे सहन करने में अपने को सर्वथा असमर्थ समझेंगी। सत्य के प्रति आपके मन में अपूर्व निष्ठा रहेगी तथा

आप बाह्य रूप से प्रदर्शन के लिए ही धर्म के प्रति अपने श्रद्धा के भाव को प्रकट करेंगी एवं अन्य जनों के समक्ष इसका प्रदर्शन भी करेंगी। समाज के सभी वर्गो के मध्य आप एक आदरणीय महिला होंगी तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी रहेगी। आप कभी कभी अल्प मात्रा में क्रोध का भी प्रदर्शन करेंगी। समाज में सभी वर्गों के लोगों से आपका प्रेम एवं स्नेह युक्त परस्पर व्यवहार रहेगा। आप किसी से भी घृणा या द्वेष की भावना अपने मन में नही रखेंगी। आप अपनी आयु से अधिक आयु वाले व्यक्तियों से विशेष आकषिढत होंगी तथा उन्ही से अधिकांश मैत्री संबंध स्थापित करेंगी। लेखन कार्य में भी रूचिशील रहकर आप कविता सृजन में सफलता अर्जित कर सकेंगी। पूणोत्साह की भावना का आप में अभाव रहेगा तथा लालची प्रवृति होने के कारण कभी कभी आपके लिए अनावश्यक परेशानियां भी अकस्मात ही उत्पन्न होंगी।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने समस्त परिवार के पालन पोषण में अपना अधिकाँश समय व्यतीत करेंगी। साथ ही आपकी कमर पतली होगी। आपकी प्रवृति शीघ्र ही अन्य लोगों की बातों को मान जाने की होगी तथा कई बार उन्ही के कथनानुसार आप आचरण करने के लिए भी तत्पर हो जाएंगी। आप में आलस का भी प्रभाव रहेगा। अतः आपके कार्य शनैः शनैः ही सम्पन्न होंगे परन्तु भाग्य की प्रबलता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से ही स्वतः सिद्ध हो जाएंगे। यात्रा तथा भ्रमण की आप शौकीन रहेंगी तथा आपका अधिकांश समय इन्हीं पर व्यतीत होगा। शारीरिक बल आप में मध्यम रहेगा परन्तु आप एक साहसी महिला होगी। अतः अगम्य स्थानों एवं कठिन कार्यों को करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगी। इसके अतिरिक्त वात जनित रोगों से आप व्याकुल रहेंगी एवं समय समय पर इनसे कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी। साथ ही समस्त सद्गुणों से भी आप सम्पन्न रहकर जीवन व्यतीत करेंगी।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।
बृहज्जातकम्

परिवार में आपको सामान्य सम्मान ही प्राप्त होगा परन्तु उसकी मर्यादा तथा रीति का अनुपालन करने तथा उसको आगे बढ़ाने में आपका विशेष योगदान रहेगा। अपने पति के ऊपर पूर्ण नियंत्रण रखने में आप सफल रहेंगी तथा वे सभी प्रमुख सांसारिक कार्यों को बिना आपकी सलाह या निर्देश के सम्पन्न नहीं करेंगे एवं स्वतंत्र निर्णय लेने में अपने आप को अत्यन्त ही असमर्थ समझेंगे। सज्जन एवं भद्रपुरूषों के द्वारा हमेशा आपकी प्रशंसा की जाएगी। माता के प्रति आपके मन में विशेष स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा। साथ ही पुत्र से युक्त

होकर आप सांसारिक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करेंगी। बन्धु वर्ग की आप प्रमुख सहयोगी होगी एवं उनकी हर तरह से सहायता करती रहेंगी। साथ ही आप धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी एवं धनाढ्य कहलाएंगी। आपके मन में त्याग की भावना का भी समावेश रहेगा तथा समय समय पर आप अपनी इस भावना का जीवन में अनुपालन करती रहेंगी। आपके परिवार के सदस्यों की संख्या भी अधिक रहेगी एवं सुख के प्रति नित्य आपके मन में चिन्ता के भाव रहेंगे लेकिन उसकी प्राप्ति के लिए भी सुखसंसाधनों को एकत्रित करने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगी।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

आपको अपने जीवन काल में किसी अन्य व्यक्ति, संबंधी या मित्र की धन सम्पति प्राप्त होगी तथा आप आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगी। समाज के अन्य जनों के विषय में भी आप चिन्तित रहेंगी तथा उनकी प्रमुख समस्याओं के समाधान के लिए भी प्रायः तत्पर रहेंगी। आप सलाह देने आदि कार्यों में भी निपुण होंगी तथा अन्य जन आपसे इस प्रवृति का लाभ उठाते रहेंगे। आप भाई बन्धुओं का भी पूर्ण रूप से लालन पालन करेंगी तथा सुख दुःख में उनका सहयोग करेंगी। इसके साथ ही आप में वीरता के गुणों की बहुलता रहेगी तथा साहस पूर्वक अपनी समस्याओं का समाधान करेंगी।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

गीत शास्त्र में आप विशेष योग्यता प्राप्त करेंगी एवं इस क्षेत्र में इच्छित सफलता एवं ख्याति भी अर्जित करेंगी। आपका शरीर कान्ति एवं लावण्यता से युक्त रहेगा तथा इससे आपकी सौन्दर्य वृद्धि होगी जिससे आपके प्रति अन्य जनो का आकर्षण बढ़ेगा।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरुषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरुषो भवेत्।।
जातका भरणम्

देव गण में जन्म होने के कारण आपकी वाणी मधुर एवं उत्तम रहेगी। साथ ही आप सरल बुद्धि की महिला होंगी एवं सुगमता से अपने विचारों की अभिव्यक्ति करेंगी तथा सुगमता से अन्य के विचारों को ग्रहण करेंगी। अल्प मात्रा में सात्विक भोजन करना आपको अत्यन्त ही रुचिकर लगेगा। दूसरे लोगों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा भले

बुरे की पहचान करने में भी आप सक्षम रहेंगी। आप स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा वर्णित सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी एवं जीवन में विपुल धनैश्वर्य उपभोग करेंगी।

आपका शारीरिक स्वरूप दर्शनीय रहेगा एवं प्रारम्भ से ही आपके मन में दानशीलता की भावना रहेगी। अतः यथा शक्ति समय समय पर अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करती रहेंगी। आपकी बुद्धि तीव्र होगी एवं सादगी पूर्ण जीवन बिताने की आप इच्छुक रहेंगी तथा आवश्यक दिखावे की आप यत्नपूर्वक उपेक्षा करेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में एक श्रेष्ठ विदुषी के रूप में भी आपकी प्रतिष्ठा तथा ख्याति रहेगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

वानर योनि में उत्पन्न होने के कारण आप में नैसर्गिक रूप से चंचलता का भाव रहेगा एवं आपके अधिकांश कार्य चंचलता से ही सम्पन्न होंगे। मीठे पदार्थो के भक्षण में आपकी तीव्र रूचि रहेगी तथा इनकी प्राप्ति के लिए आप उत्सुक तथा हमेशा तत्पर रहेंगी। धन प्राप्ति के प्रति आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी एवं इसको प्राप्त करते समय आप आतुरता या अधीरता का भी प्रदर्शन करेंगी। आपकी संतति भी बुद्धिमान एवं गुणवान रहेगी। इस के साथ ही अन्य जनों से विवाद आदि में भी आपकी रूचि रहेगी तथा यदा कदा आपका अन्य लोगों से विवाद होता रहेगा। साथ ही आप वीरता के गुणों से भी युक्त रहेगी एवं साहस तथा निर्भयता पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव रहेगा तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप जीवन में पिता के द्वारा यश अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पिता के द्वारा आपके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान भी रखा जाएगा।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी तथा उनकी सेवा एवं आज्ञा पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथापि यदा कदा अल्प मात्रा में सैद्धान्तिक मतभेद विद्यमान रहेंगे जिससे यदा कदा विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। साथ ही आप जीवन में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगल वार चतुर्थ प्रहर एवं वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक होंगे। अतः आप 15 अपैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र वैधृतियोग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहे।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता या अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह

भगवान की श्रद्धापूर्वक पूजा करनी चाहिए तथा नियमित रूप से शनिवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम लोहा, पंच धातु, तिल तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।